श्री स्थानाङ्गसूत्र भा. तीसरे की

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
	स्था. ४ तीसरा उद्देशा	
१	उदकदृष्टान्तसे चार प्रकारके भावोंका निरूपण	१–५
२	पक्षीके दृष्टान्तसे चार प्रकारके पुरुषजातका निरूपण	५–१४
३	दृष्टान्त सहित पुरुषजातका निरूपण	१५–१६
४	दृष्टान्त सहित श्रमणोपासकके आश्वास–विश्राम का निरूपण	१७–२५
५	फिरभी पुरुष विशेषका निरूपण	२६–३२
६	भावसे जीवोंका निरूपण	३३–३४
७	लेश्या का निरूपण	३५–३६
८	यानादिके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	३७–४३
९	युग्य–वृषभादि के दृष्टान्तसे दार्ष्टान्तिक पुरुषजात का निरूपण	४४–४६
१०	सारथीके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	४७–५१
११	गजके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	५२–५६
१२	पुष्पके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	५७
१३	जातिसम्पन्नादि पुरुषजातका निरूपण	५८–६६
१४	चार प्रकारके फलके स्वरूपका निरूपण	६७–६८
१५	चार प्रकारके पुरुषजातका निरूपण	६९–७८
१६	चार प्रकारके आचार्यके स्वरूपका निरूपण	७९–८३
१७	निर्ग्रन्थके स्वरूपका निरूपण	८४–८८
१८	श्रमणोपासकके स्वरूपका निरूपण	८९–९२
१९	महावीरस्वामीके श्रमणोपासकोंके सौधर्म कल्पस्थित अरुणाभ विमानकी स्थितिका निरूपण	९३–
२०	मनुष्यलोकमें देवोंके आगमन–आना और अनाग-मन्–नहीं आनेके कारणोंका निरूपण	९४–१०८
२१	लोकान्धकार–एवं लोकोद्द्योत के कारणोंका निरूपण	१०९–११३

२२	दुःस्थित साधुकी दुःखशय्या और सुस्थित साधुकी सुखशय्याका निरूपण	११४–१३१
२३	चार प्रकारके पुरुषजात विषयक चौदह चतुर्भङ्गीका निरूपण	१३२–१५७
२४	कन्थकके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	१५८–१७६
२५	अप्रतिष्ठान् आदि नरकोंका आयाम और विष्कम्भसे साम्य का निरूपण	१७७–१७९
२६	ऊर्ध्व–अधस्तीर्यग्लोकके द्विशरीरि जीवोंका निरूपण	१८०–१८३
२७	ह्रीसत्व–आदि चार प्रकारके पुरुषजातका निरूपण	१८४–१८५
२८	चार प्रकारके अभिग्रहका निरूपण	१८६–१८९
२९	चार प्रकारके शरीरका निरूपण	१९०–१९३
३०	चार प्रकारके अस्तिकायसे उत्पद्यमान बादरकायसे लोकस्पृष्टत्वका निरूपण	१९४–१९७
३१	चतुर्विध अस्तिकायादिकोंका प्रदेशाग्रतुल्यत्व आदिका निरूपण	१९८–१९९
३२	पृथिवीकाय आदि चारोंका सूक्ष्मशरीरके अदृश्यत्व का निरूपण	२००–२०३
३३	जीव और पुद्गलके गतिधर्मका निरूपण	२०४–२०५
३४	दृष्टान्तके भेदों का कथन	२०६–२५८
३५	अधोलोक–ऊर्ध्वलोकमें रहे हुवे अन्धकार और उद्योत के कारणोंका निरूपण	२५९–२६१
	चौथे स्थानका चौथा उद्देशाः—	
३६	प्रसर्पकोंका निरूपण	२६२–२६५
३७	नारकोंके आहारका निरूपण	२६६
३८	तिर्यक्–मनुष्य–और देवोंके आहारका निरूपण	२६७–२६९
३९	आशीविष–सर्पों के स्वरूपका निरूपण	२७०–२७२
४०	व्याधिके भेदों का निरूपण	२७३–२७७
४१	चिकित्सकके स्वरूपका निरूपण	२७८–२८८
४२	व्रण आदि दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	२८९-२९९
४३	क्रियावादी वगैरह तीर्थिकोंके स्वरूपका निरूपण	३००–३०३
४४	मेघके दृष्टान्त द्वारा पुरुषजातका निरूपण	३०४–३१८

४५	करण्डकके दृष्टान्तसे आचार्यादिकोंका निरूपण	३१८–३२०
४६	वृक्षके दृष्टान्तसे आचार्यके स्वरूपका निरूपण	३२२–३२५
४७	मत्स्यादिके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	३२६–३३७
४८	क्षुद्रप्राणियोंका निरूपण	३३८–३४०
४९	पक्षीके दृष्टान्तसे भिक्षुकका निरूपण	३४१
५०	पुरुषजातका निरूपण	३४२–३४८
५१	चार प्रकारके दिव्यादि संवासका निरूपण	३४९–३५२
५२	असुरादि चार प्रकारके अपध्वंसका निरूपण	३५३–३६३
५३	प्रव्रज्याके स्वरूपका निरूपण	३६४–३७५
५४	संज्ञाके स्वरूपका निरूपण	३७६–३७८
६५	कामके स्वरूपका निरूपण	३७९–३८०
५६	उदकके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	३८१–३९२
५७	कुम्भके दृष्टान्तसे पुरुषजातका निरूपण	३९३–४०५
५८	उपसर्गके स्वरूपका निरूपण	४०६–४१३
५९	कर्म विशेषका निरूपण	४१४–४१८
६०	चार प्रकारके संघके स्वरूपका निरूपण	४१९–४२१
६१	चार प्रकारकी बुद्धिके स्वरूपका निरूपण	४२२–४३२
६२	जीवके स्वरूपका निरूपण	४३३–४३५
६३	जीवके अन्तर्गत पुरुषविशेषका निरूपण	४३६–४४१
६४	द्वीन्द्रिय जीवोंको असमारभमाण और समारभमाण के संयमासंयमका निरूपण	४४२–४४४
६५	नैरयिक जीवोंकी क्रियाका निरूपण	४४५–४४६
६६	क्रियावान् जीवका विद्यमान गुणोंका नाश और अविद्यमान् गुणोंका प्रकट होनेका कथन	४४७–४५२
६७	धर्मद्वारका निरूपण	४५३
६८	नारकत्वादिके साधनभूत कर्म द्वारका निरूपण	४५४–४५८
६९	वाद्यादिके भेदोंका निरूपण	४५९–४६७
७०	सनत्कुमारादिकोंके विमानोंके स्वरूपका निरूपण	४६८–४७१
७१	जलगर्भका निरूपण	४७२–४७४
७२	मानुषीके गर्भका निरूपण	४७५–४७८
७३	चार प्रकारके काव्योंके स्वरूपका निरूपण	४७९–४८०

७४	समुद्घातके स्वरूपका निरूपण	४८१-
७५	लब्धिके स्वरूपका निरूपण	४८२-
७६	भगवान् महावीरके पूर्वधरोंका निरूपण	४८३
७७	कल्पोंके स्वरूपका निरूपण	४८४-
७८	समुद्ररूप क्षेत्रका निरूपण	४८५-४८६
७९	कषायोंके स्वरूपका निरूपण	४८७-४९०
८०	कर्मपुद्गलोंके चयनादि निमित्तोंका निरूपण	४९१-४९४
	पांचवें स्थानका पहला उद्देश	
८१	पांच प्रकारके महाव्रतोंका निरूपण	४९५-५०३
८२	वर्णादिका निरूपण	५०४-५११
८३	संयमके विषयभूत एकेन्द्रिय जीवोंका निरूपण	५१२-५१४
८४	अवधिदर्शनके क्षोभके कारणोंका निरूपण	५१५-५२१
८५	केवलज्ञान दर्शनमें क्षीम न होनेका निरूपण	५२२
८६	नैरयिक आदिकोंके शरीरका निरूपण	५२३-५३०
८७	शरीरगतधर्मविशेषका निरूपण	५३१-५५२
८८	निर्ग्रन्थोंको महानिर्जरादिकी प्राप्तिके कारणका निरूपण	५५३-५५५
८९	आज्ञाके अविराधनके कारणका निरूपण	५५६-५६१
९०	पांच प्रकारके विग्रहस्थानका निरूपण	५६२-५६८
९१	विषद्यादि स्थानोंका निरूपण	५६९-५७१
९२	देवोंके पांच प्रकारका निरूपण	५७१-५७२
९३	देवोंके परिचारणाका निरूपण	५७३-५७५
९४	देवोंके अग्रमहिषियोंका निरूपण	५७५-
९५	चमरेन्द्रादिकोंके अनीक और अनीकाधिपतियोंका निरूपण	५७६-५८४
९६	प्रतिघातका निरूपण	५८५-५८८
९७	उत्तरगुणोंके भेदोंका निरूपण	५८९
९८	परीषह सहनेका निरूपण	५९०-६०२
९९	हेतु और अहेतुके स्वरूपका निरूपण	६०३-६१०
१००	तीर्थंकरोंके चवनादिका निरूपण	६११-६१८

॥ समाप्त ॥